ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 76-78**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- I, Issues-39, YEAR- Jan.-March 2026

भारतीय समाज में महिला आन्दोलन

डॉ0 सुनील कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर– समाजशास्त्र विभाग, के. बी. पी. जी. कालेज, मीरजापुर (उ0प्र0), भारत

Received-25.01.2026, Revised-03.02.2026, Accepted-10.02.2026 E-mail:sunilsarita1212@gmail.com

सारांशः ***भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक एक विमर्श का विषय बना हुआ है। यह घोर विडम्बना है कि पुरुषों के जन्म का कारण स्त्रिया है और सम्पूर्ण समाज के निर्माण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है, परन्तु वह पितृसत्तात्मक समाज में अभी भी अपने समनता के लिए लड़ाई लड़ना पर रहा है। स्त्रियो के बहुआयामी शोषण और उनके साथ होने वाले अत्याचारों का कारण पुरुष ही है। विश्व में संख्या की दृष्टी से स्त्रिया पुरुषों के समान है फिर भी समाज में उन्हें गौण या द्वितीय स्थान दिया जाता है। प्राचीन काल से ही पुरुषवादी मानसिकता ने महिलाओं को शोषण का विषय मान लिया है किसी न किसी प्रकार से उनका शोषण किया जा रहा है। मानवता के इतिहास को सर्वेक्षण इस तथ्य की पुष्टी करता है कि अभी भी स्त्रियो को समाज में पुरुषों के समान उच्च स्थान नही दिया गया। पुरुषो ने कभी भी महिलाओं की दयनीय स्थिति का मूल्यांकन नही किया तथा उन्हें घर के चहार दिवारों के अंदर कैद करके प्रजनन का साधन मात्र माना। इतिहास इस बात का साक्षी है कि पुरुषों ने हर प्रकार की स्वंत्रता का उपयोग किया परन्तु स्त्रियों को इससे वंचित किया। कभी महिलाओं को गुलाम का स्थान दिया गया, कभी दासी का और कभी इन्हें अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा दिखाने का साधन बनाया समाज में इन्हे हमेशा आशक्त एवं कमजोर माना गया। आज सम्पूर्ण विश्व में स्त्रियों की स्थिति में अभूतपूर्व परिवर्तन आया है। महिलाओं ने अपने शोषण के विरुद्ध आवाज उठाकर पुरुषवादी मानसिकता को उखाड़ फेकने का कार्य किया वह बहुत लम्बे समय तक संघर्ष एवं आन्दोलन करके समाज में अपनी स्थिति को मजबूत करने में अवश्य सफल हुई। पश्चिम से शुरु हुए नारी स्वत्रंता आन्दोलन ने आज सम्पूर्ण विश्व की महिलाओं को प्रेरित किया है। उन्होने अपने कर्तव्यों के साथ अपने अधिकारो को भी जाना और प्राप्त करने के लिये आन्दोलनरत है।***

कुंजीभूत शब्द– भारतीय समाज, महिला आन्दोलन, घोर विडम्बना, पितृसत्तात्मक समाज, बहुआयामी शोषण, पुरुषवादी मानसिकता।

भारतीय समाज में स्वतंत्रता के पूर्व एवं पश्चात महिलाओं की स्थिति बहुत दयनीय थी जाति व्यवस्था के नियम पर्दा प्रथा, सती प्रथा तथा बाल विवाह के नियमों नें भारतीय महिलाओं को कमजोर तथा असहाय बना दिया था। हमारें धार्मिक ग्रन्थों का अध्यन किया जाये, तो वह भी स्त्री को पुरुषों के समान अधिकार नही था। महिलाओं को हमेशा एक साधन के रुप में प्रयोग किया गया भारतीय सामाजिक व्यवस्था में कुछ ऐसे नियमों प्रतिमानों को शामिल किया गया, जिससे महिलाओं की स्थिति हमेशा पुरुषों से नीचे रहा उनको लम्बे समय तक पुरुषों के अधीनस्थ रहना पड़ा इन्ही अत्याचारों एवं शोषण के विरुद्ध महिलाओं ने अपने हक एवं अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी और इसका एक लम्बा इतिहास रहा है। आधुनिक शिक्षा एवं समाज सुधार आन्दोलन से महिलाओं की स्थिति में अवश्य सुधार हुआ है। आधुनिक शिक्षा और विज्ञान का सहारा लेकर आज महिलाओं ने पुरुषों के समान समाज में अपनी स्थिति को मजबूत किया है।

स्त्री– पुरुष एक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण– प्रत्येक समाज में स्त्री एक गम्भीर मुद्दा रहा है। समाज महिला पुरुषों के समान अपनी जीवन यापन कर रही है या नही यह एक अध्ययन का विषय है। विभिन्न समाजों में महिलाओं के सम्बन्ध में विभिन्न दृष्टीकोण अपनाये गये है। आदिम काल में मानव समाज की उत्पत्ति स्त्रियो की केन्द्रिय एवं आधार भूत भूमिका को देखते हुये इन्हें अराध्य देवी का स्थान दिया गया था यही कारण है, स्त्रियों को माँ का दर्जा दिया गया है। Will Durant ने Pleasures Of Philosophy नामक पुस्तक में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करते हुए कहा कि महिला सच्ची प्रेमिका सिद्ध होती है, जबकि पुरुष सच्चे मित्र मात्र सिद्ध होते है। पुरुषों में प्रेम और घृणा दोनों की ही गहनता देखी जा सकती है। पुरुषों में अधिपत्य या स्वामित्व की भावना और झूठा अहंकार सहज देखा जा सकता है। स्त्रियो के सम्बन्ध में कहा गया है कि यदि उन्हें प्रेम नही किया जाय तो उनका जीवित रहना दुष्कर हो जाता है। सदियों से स्त्रियों का प्रमुख कार्य प्रजनन माना गया तथा बच्चों और स्त्रियों की देखभाल करना उन्हें संरक्षण प्रदान करना पुरुषों का प्रमुख कार्य है। हार से बाहर कार्य करने वाला पुरुष स्वभाविक रुप से अधिक संघर्षशील एवं हिंसक हो जाता है। महिला में शांति और अहिंसा की भावना सहज देखी जा सकती है। स्त्री में संयम, धैर्य, सहिष्णुता और संवेदनशीलता की अधिकता होती है। अपनी शारीरिक अवश्यकता एवं आर्थिक निर्भरता के कारण स्त्रियों में स्वयं के प्रति ही अनिश्चितता का भाव व्याप्त रहता है, जो उनके आत्म विश्वास के अभाव का प्रतीक है। स्त्रिया परम्पराओं और प्रथाओं रीति रिवाजों धार्मिक विश्वासों और स्थापित मान्यताओं के प्रति अधिक आस्थावान होती है। स्त्रिया पुरुषों की अपेक्षा सामाजिक स्वीकृति की अकांक्षा रखती है।

महिला आन्दोलन एवं नारीवादी विचारधारा– महिलाओं की स्थिति को सुधारने के लिए बहुत विचारकों ने महिलाओं के पक्ष में अपने विचार रखे उन्होने महिलाओं की समाज में हो रहे अवहेलनाओं तथा अत्याचारों के प्रति समाज का ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास किया अपने कथन एवं लेखनों से नारी की पीड़ा को समाज के सामने रखा। 1949 में प्रकाशित साइमन डी बुआ की प्रसिद्ध पुस्तक 'The Second Sex' में उन्होने नारीवादी विचारधारा को प्रस्तुत किया समाज में हो रहे लिंगीय विभेद के प्रश्नों को उन्होने अपनी पुस्तकों के माध्यम से उठाया उनकी इस विचारधारा ने महिलावादियों को बहुत प्रेरित किया तथा दर्शन में भी लिंगीय समालोचना को महत्वपूर्ण स्थान दिया नारी अस्तित्ववादी मान्याताओं को स्वीकार करने के कारण साइमन डी बुआ की आलोचना भी की जाती है। बुआ के अनुसार स्त्रियों की दयनीय स्थिति के लिए जो सामान्यतया स्वीकृति धारणा है वह सही नही है इस स्थिति के जो जीववैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक और आर्थिक स्पष्टीकरण दिये जाते है वे भी स्वीकार्य नही है। उनकी मान्यता है कि प्रजनन के क्षेत्र में लिंगीय विभेद ने स्त्रियों पर एक अतिरिक्त प्रभाव अवश्य डाल दिया है, परन्तु सामाजिक मुल्यों और प्रवृत्तियों ने भौतिक तथ्यों की अपेक्षा अधिक प्रभाव डाला है। इस प्रकार मातृत्व ने स्त्रियों को उतना अलग– थलग नही किया, जितना स्थापित मान्यताओं एवं समाज ने पृथक किया। बुआ का विश्व प्रसिद्ध कथन है कि 'नारी जन्म नही लेती बल्कि उसे बना दिया जाता है'। नारीवादी विचारकों का जोर था कि जब तक स्त्रिया स्वयं अपनी प्रदत्त सामाजिक भूमिकाक के विरुद्ध प्रतिक्रिया व्यक्त नही करेंगी तथा अपनी सामाजिक स्थिति के प्रति सहनशील बनी रहेंगी, तब तक वे स्वतंत्रता की अनुभूति नही कर सकेंगी तथा अत्याचार और शोषण से मुक्ति नही प्राप्त कर सकेंगी।

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- I, Issues-39, YEAR- Jan.-March 2026

नारीवादी विचारकों में फारय स्टोन द्वारा रचित पुस्कत 'द डायलेक्टिस आफ सेक्स', वेट्टी फ्रेडल की पुस्तक 'द फेमिनिन मिस्टक' तथा के. मिलेट की पुस्तक 'सेक्सुअल पालिटिक्स' का व्यापक प्रभाव पड़ा और इससे प्रभावित होकर तमाम रचनाकारों ने अपने लेखन में नारी मुक्ति को मूद्दा बनाकर लिखना आरम्भ किया। बेट्टी फ्रेडल ने नेशनल आर्गनाईजेशन आफ विमेन नाम से सन् 1966 में एक संगठन की स्थापना की जिसने नारी स्वतंत्रता आन्दोलन के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में प्रजातंत्र के समर्थकों ने इमानदारी पूर्वक वस्तुगत ढंग से स्त्रियों की स्थिति के बारे में विचार करना प्रारंभ किया। अन्य विचारकों में डिडरो ने यह प्रदर्शित करने का प्रयास किया कि स्त्री, पुरुष की तरह एक मानव प्राणी है। कालान्तर में जान स्टुअर्ट मिल ने स्त्रियों के पक्ष में खुलकर अपने विचार को अभिव्यक्त किया। इन दार्शनिकों नें महिला आन्दोलन के लिए अपने असाधारण क्षमता का परिचय दिया औद्योगिक क्रान्ति के परिणाम स्वरुप उत्पादक श्रम के क्षेत्र में महिलाओं के प्रवेश ने पुरुषों के समक्ष प्रबल प्रतिस्पर्धा उत्पन्न कर दिया। अब महिलाओं के सामने एक बड़ा प्रश्न उठकर खड़ा हुआ कि इस मानसिकता से कैसे निपटा जाये पुरुषवादी विचार धारा महिलाओं की स्वतंत्रता तथा बाहर निकलकर कार्य करना उचित नही समझा उन्होनें सोचा कि नारी स्वतंत्रता कही पुरुष प्रधान समाज के लिए खतरा न उत्पन्न करे इसलिए वह उन्हें प्रतिवन्धित करने का प्रयास करने लगा। नारी मुक्ति के आन्दोलन ने यूरोप के साथ अमेरिका के विभिन्न क्षेत्रों में यह मांग होने लगा कि किसी ऐसे व्यवस्था को स्वीकार नही किया जायेगा, जो पुरुष प्रधान के पक्ष में हो। महिलाओं ने अपने आजादी के पक्ष में नारे दिये और बताने का प्रयास किया कि हम श्रेष्ठ है। हमें पुरुषों के बराबर नौकरी और वेतन चाहिए। हमारे साथ हो रहे लैगिक अत्याचारों को बन्द किया जाय। हमें भी उतना अधिकार एवं स्वतंत्रता चाहिए, जितना पुरुषों को समाज मे मिलता है।

भारत में महिला आन्दोलन एवं प्रयास– भारत में महिलाओं की दशा को सुधारने के लिए बहुत सारे प्रयास किया गया महिलाओं को उसकी सामाजिक पहचान दिलाने के लिए केवल महिला ही नही बल्कि पुरुष भी इसके लिए अथक प्रयास किया। भारत में जो नारीवादी आन्दोलन का विकास हुआ। वह यूरोप की नारीवादी आन्दोलन से भिन्न था। भारत में महिला आन्दोलन अखिल भारतीय स्तर पर संगठित रुप से नही हुआ बल्कि विभिन्न छोटे छोटे समूहों एवं संगठनों ने इसके लिए मिलकर प्रयास किया। इसे हम तीन चरणों में बाटकर देख सकते है।

प्रथम चरणः महिला आन्दोलन के प्रथम तरणों में 19 वीं शताब्दी का महिला सुधार आन्दोलन को शामिल किया जाता है। इस प्रथम चरण में महिलाओं की सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास के प्रयास किये गये जिसमें मुख्य रुप से विभिन्न समाज सुधारकों का प्रयास सराहनीय रहा है जैसे राजाराम मोहन राय, महादेव गोविन्द रानाडे, ज्योतिबाराय फूले, स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानंद आदि के प्रयत्नों ने समाज में नारी की दशा को सुधारने में अहम भूमिका निभाया। राजाराम मोहन राय ने सबसे पहले समाज में व्याप्त सती प्रथा, बाल विवाह एवं पर्दा प्रथा के खिलाफ अपने आवाज बुलन्द किया। उन्होने कहा कि समाज में उन सभी प्रथाओं को हटाना होगा जिससे महिला समाज का शोषण होता है। समाज में कुछ ऐसे कुप्रथाओ का प्रचलन था, जो केवल महिलाओ के उपर लागू था और जिन्हें समाज के द्वारा मान्यता प्राप्त था।

द्वितीय चरणः भारत में महिला सुधार आन्दोलन को 20 वीं शताब्दी मे और तीब्र गति मिली। 20 वीं शताब्दी को समाज सुधार एवं पुनर्जागरण का काल माना जाता है। इस अवधि में महिला पर हो रहे अत्याचारों एवं शोषण के विरुद्ध आवाज को उठाया गया। स्मृतियों एवं पुराणों मे दिये गये व्यवहार के धार्मिक नियमों के अधार पर महिला समाज को निम्न स्थान दिया गया। उन्हें एक तरह का दासी जीवन जीने के लिए मजबूर किया समाज और परिवार मे उन्हे उसके अधिकारों से वंचित किया। 20 वीं शताब्दी के आरम्भिक दौर में जब भारत के राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन जोर पकड़ रहा था, उसी दौर में महिला आन्दोलन भी अपने चरम अवस्था की ओर बढ़ रहा था। नारीवादी विचारकों एवं समाज सुधारकों ने स्त्री के समानता और अधिकारों के आवाज को उठाया, इसी समय महात्मा गाँधी के साथ महिलाओं ने मिलकर अपने स्वतंत्रता के लिए सामूहिक रुप से घर से बाहर निकलकर आन्दोलन एवं धरना में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ। गाँधी जी ने स्वयं यह घोषणा किया की स्त्री – पुरुष की सहचारी है। उसकी मानसिक योग्यता पुरुषों से कम नही है। स्त्रियों को यह अधिकार मिलना चाहिए कि वह पुरुषों के साथ हर गतिविधि में शामिल हो 1917 में जब एक अंग्रेज महिला ऐनी बेसेन्ट को अखिल भारतीय कांग्रेस का सदस्य बनाया गया तो यह महिला समाज के लिए गौरव का बात था। समाज में एनी बेसेन्ट ने भी अपने कार्यों एवं विचारों द्वारा लोगों की निःस्वार्थ सेवा की। एनी बेसेन्ट ने मार्ग्रेट कजिंस और जीना राजादास के साथ मिलकर अखिल भारतीय महिला परिषद की स्थापना की जिसका काम भारतीय महिलाओं मे अपने हितों के प्रति जागरुका का विकास हो सके। इससे प्रभावित होकर कुछ मुस्लिम महिलाओं नें भी अपने समाज में व्याप्त पर्दा प्रथा, बहुपत्नी विवाह आदि कुप्रस्थाओं के खिलाफ कुछ संघठनों का निर्माण किया भोपाल की रियासत बेगम ने भी एक मुस्लिम विमेन कॉन्फ्रेंस की स्थापना की।

तृतीय चरणः महिला आन्दोलन के तृतीय चरण का समय काल भारत स्वतंत्रता के बाद के समय को माना जाता है। ब्रिटिश शासन की समाप्ति के बाद भारतीय समाज में नए सिरे से शासन व्यवस्था की स्थापना पर जोर दिया गया, जिसमें लैंगिक असमानता और महिला स्वतंत्रता पर विशेष ध्यान केन्दित किया गया। स्वतंत्रता के बाद भारत में जब नया संविधान लागू हुआ तब इसके द्वारा जाति, धर्म और लिंग आधारित सभी भेदभावों को दूर करने का प्रयास किया गया। भारत में सन 1950 में सभी वयस्क महिलाओं को वोट देने का अधिकार बिना किसी संघर्ष के प्राप्त हो गया, जिससे राजनीतिक एवं सामाजिक रुप से महिलाओं की प्रस्थिति में सुधार आया इसके बाद 1954 में विशेष विवाह अधिनियम और 1955 मे हिन्दू विवाह अधिनियम के आने से विवाह संबंधी समस्याओं को दूर किया गया। 1961 में दहेज जैसे कुरीतियों को समाप्त करने के लिए कड़े नियमों का प्रावधान किया गया। इसी समय महिलाओं ने अपने प्रयास से कुछ ऐसे संगठनों का निर्माण किया, जो नारी उत्थान में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई महिलाओं के कुछ ऐसे संगठन स्थापित हुए। जिन्होने क्षेत्रीय अधार पर महिला की समस्याओं के विरुद्ध आवाज को उठाया जैसे गुजरात में स्वरोजगार संस्था तमिलनाडु में कार्यकारी महिला फोरम और महाराष्ट्र में श्रमिक महिला संगठनों ने नारी उत्थान के लिए सराहनीय योगदान दिया। 20 वी शताब्दी में महिलाओं नें अपनी सामाजिक स्थिति को काफी हद तक सुधार करने में सफल रही। ग्रामींण एवं नगरी शिक्षा के प्रचार प्रसार से महिलाओं में अपने प्रति हो रहे अत्याचार एवं शोषण के खिलाफ आन्दोलनों में हिस्सा लेना आरंभ कर दिया था सामाजिक समस्याओं के साथ–साथ पर्यावरणीय समस्याओ के प्रति महिलाओं का ध्यान आकर्षित हुआ। 1970 के आस–पास महिलाओ की स्थिति में सुधार के लिए महत्वपूर्ण कार्य किये गये दहेज़ यौन उत्पीड़न ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं में समानता, शिक्षा आदि के लिए व्यापक स्तर पर प्रयास किया गया।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- I, Issues-39, YEAR- Jan.-March 2026

निष्कर्ष– महिलावादी आन्दोलनों का मूल्यांकन किया जाये तो यह निष्कर्ष निकलता है कि यूरोपीय एवं भारतीय महिला आन्दोलन के फलस्वरूप समाज में महिलाओ कि स्थिति में बहुत हद तक सुधार हुआ है। आन्दोलनों से महिलाओ में चेतना का विकास हुआ। उनको समाज में पुरूषों के समान स्वतंत्रता एवं रोजगार प्राप्त करने के लिए संवैधानिक अवसर प्रदान किये गये जिसका प्रभाव आज समाज में दिखाई पड़ रहा है। आज समाज में कोई ऐसा क्षेत्र नही है जहा महिलाओ कि भागीदारी नही है। आज संविधान में बढ़ती महिलाओ की भागीदारी ने स्पष्ट कर दिया है कि राजनीतिक क्षेत्रो में उनकी गहरी आस्था है महिला आयोग, महिला हेल्प डेस्क, महिला हेल्प लाइन नम्बर आदि अनेक ऐसे प्लेटफार्म है जो महिलाओ को सम्बंधित सहायता प्रदान करते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आहुजा राम, 2018 सामाजिक समस्याए, रावत पब्लिकेशन, जयपुर।
2. Desai Neer, 2001, woman in Indian society national bool trust india.
3. कृषन राजम, 2019 भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाए, national book trust india new delhi.
4. खेतान प्रभा, 2003 उपनिवेश में स्त्री राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. सिंह जनमेजय, सिंह वी. एन., 2005 भारत में समाजिक आन्दोलन रावत पब्लिकेशन, जयपुर।
6. कुरुक्षेत्र, दिसम्बर 2024ण
7. https.drishtiias.com

*****